<u>गुन्देचा बन्धु से पी विवेकानन्द की बातचीत</u>

सवाल – ऐसा कहा जाता है कि आपने ध्रुपद गायकी में बदलाव ला दिया है । आप डागर घराने से हटकर गाते हैं।

जवाब – हमने ध्रुपद गायकी में बदलाव नहीं किया लेकिन उसके प्रस्तुतिकरण पर ज़रूर ध्यान दिया ताकि अधिक से अधिक लोग हमारी इस प्राचीन धरोहर को सुने और उसकी ओर आकृष्ट हों । कुद हद तक इसमें हम सफल भी हुए है । रही बात डागर घराने से हटकर गाने की बात तो ऐसा उन्हें लगता होगा जिन्होंने इस घराने की गायकी के सिमित आयामों को ही सुना है । इस घराने की गायकी बहुत विस्तृत है और हमने इस घराने के सभी उस्तादों को सुना है और उनकी अच्छी बातों पर अमल करने की कोशिश की है । हमारे उस्ताद फरीदुद्दीन डागर साहब और मोहिउद्दीन डागर साहब ने ध्रुपद गायकी पर बहुत विस्तार से सोचा है ।

सवाल – आपके द्रुत आलाप में कुछ ख़याल अंग की तान का आभास होता है । क्या आप ऐसा मानते हैं ।

जवाब– ख़याल ध्रुपद की गोद में ही बड़ा हुआ है । लेकिन फिर भी दोनो की तानों में मूलतः अन्तर है । ध्रुपद की द्रुत कंठ गमक ते त र न री रे र न आदि वर्णो के साथ उच्चारित होती है और इसमें ज़बान तालु से हर एक वर्ण के साथ लगती है, परिणामस्वरूप गमक का ध्वनि संस्कार पूरी तरह बदल जाता है । जबकि ख्याल में ऐसा कुछ नहीं होता । ख्याल की तान केवल आकार पर आधारित होती है और ज़बान स्थिर रहती है । एक तरीके से वह आसान भी होती है ।

सवाल – क्या आपकी गायकी पर बीन अंग का प्रभाव है ।

हमारे बड़े उस्ताद ज़िया मोहिउद्दीन डागर साहब हमें वीणा बजाकर गाने की तालीम देते थे इसलिये विशेषकर मध्य और द्रुत आलाप पर वीणा अंग का अधिक प्रभाव है । इसके अतिरिक्त डागर गायकी में वीणा और वाणी का बहुत निकट सम्बन्ध रहा है ।

सवाल – जैसा कि आपने कहा कि प्रस्तुतिकरण पर अधिक ध्यान दिया तो इसके बारे में ज़रा विस्तार से बताईये ।

हमारी कोशिश रही है कि सबसे पहले तो इस बात का प्रयास किया जाये कि श्रोता ध्रुपद को सुनने के लिये राज़ी हों । कुछ गलत प्रचार के कारण लोगों की इसके बारे में धारणा ठीक नहीं रही है । प्रस्तुतिकरण में सुर में आवाज का लगाव, गायकी में उत्सुकता और छोटे छोटे फ्रेज़ेज़ का इस्तेमाल , शब्दों का स्पष्ट उच्चारण, पखावज के साथ लड़न्त भिडन्त में रस भंग न हो इन बातों पर हमने विचार किया है । हमारे उस्ताद ने हमारी आवाज़ को बनाने में बहुत ध्यान दिया ।

सवाल – आप दोनो अलग अलग स्वर पर एक साथ गाते है । उससे कुछ पाश्चात्य हारमनी जैसा लगता है ....।

नहीं । हमारे शास्त्रों में स्वर संवाद पर बहुत पहले से विचार हुआ है । हमारा पूरा राग विज्ञान संवाद की अवधारण लिये हुए है । स्वयं तानपूरे में षड़ज पंचम या षड़ज मध्यम के एक साथ बजने से जो संवाद जन्म लेता है उसी पर हम राग खड़ा करते है और वही स्वर संवाद हम लोग करते है । तो कहना यह है कि कुछ भी पाश्चात्य नहीं है । हमारे बड़े उस्ताद वीणा पर त्रिभिन्न स्वरों को बजाते थे वैसा ही कुछ संवाद हम भी करने का प्रयास करते हैं ।

सवाल – लेकिन जैसा आप गाते है वैसा डागर घराने में पहल नहीं गाया गया ।

देखिये हम फिर वहीं कहेंगे कि हमने मूल सिद्धान्तों के आधार पर प्रस्तुतिकरण में परिवर्तन किया है । और यह प्रत्येक व्यक्ति का अपना अपना होता है उसके स्वभाव और सोच पर आधारित होता है । हमारे डागर घराने के सातों उस्ताद के गाने की छाप भी आप देखेंगे कि अलग अलग है । मसलन अगर सीनीयर डागर बन्धु / स्व. उस्ताद मोईनुद्दीन डागर और स्व. उस्ताद नसीर अमीनुद्दीन डागर / की गायकी को पैमाना बना दिया जाये तो बाकि उस्तादों की गायकी में बहुत फर्क देखने को मिलेगा और कई

प्रश्न पैदा हो जायेगे । अतः हर कलाकार का अपना एक मिजाज होता है और उसकी गायकी उसी के अनुरूप ढ़लती है ।

सवाल – ध्रुपद तो इतनी प्राचीन और सशक्त गायकी है फिर इतनी पीछे क्यों रह गयी ।

इसका प्रमुख कारण प्रचार है । इसे अत्यन्त कठिन और दुष्कर गायकी के रूप में प्रचारित और प्रस्तुत किया गया । यदि कोई सीखना भी चाहे तो वह भाग खड़ा हो । खयाल गायकी की तुलना में इस गायकी के कलाकार बहुत कम रह गये और श्रोतोओं के समक्ष ध्रुपद कम प्रस्तुत हुआ । फिर थोड़ा कलाकारों ने अपनी सीमाओं के आधार पर गायकी को भी बांध दिया । उसमें नयी उर्जा और विचार के लिये कम स्थान रह गया । पखावज के साथ लड़न्त भिड़न्त को ही ध्रुपद का पयार्य कहा जाने लगा । और सबसे महत्वपूर्ण यह भी कि इस गायकी की तालीम बहुत कम लोगों को मिली । अब ध्रुपद का परिदृष्य बदला है । पहली बार हमारे दोनो उस्तादों ने डागर परिवार के बाहर जाकर अनेक लोगों को ध्रुपद गायकी की खुले दिल और दिमाग से शिक्षा दी । इसके रूढ़ स्वरूप की कमियों पर विचार किया और उसे एक ऐसी दिशा देने का प्रयास किया कि लोग इस गायकी की और भी आकृष्ट हों । इस प्रचार अभियान से काफी लोग अब इस गायकी की महत्ता को समझने लगें है और इसीलिये आज यह गायकी शास्त्रीय संगीत की मुख्य धारा में खड़ी है ।

सवाल – आपको ध्रुपद का भविष्य कैसा लगता है ।

ध्रुपद उतना न तो निरस है ओर नहीं उतना कठिन है जितना प्रचारित किया गया है । अब कई लोग इसे सीख रहे है और निश्चित रूप से इसका भविष्य उज्जवल है । इसके कार्यक्रमों की संख्या भी अब बढ़ी है । और फिर यह संगीत के शाश्वत सिद्धान्तों पर टिका हुआ है तो इसे छोड़कर हम जायेंगे कहाँ ।

सवाल – ध्रुपद तो फाउन्डेशन है, हमारी शास्त्रीय गायकी का आधार है ऐसा कहते है कि जो ध्रुपद गा सकता है वह सब कुछ गा सकता है । आप क्या कहेंगे ।

ध्रुपद को केवल फाउन्डेशन कहना फिर ग़लत होगा । यह अपने आप में एक सम्पूर्ण गायकी है । जिसमें विस्तार की अनन्त संभावनाएं है । इसलिये यह सही है कि इसकी गायकी गले में ऐसी क्षमता पैदा कर सकती है कि आप कुछ भी गा सकें ।

सवाल – अन्त में नये सीख़ने वालों का क्या कहना चाहेंगे ।

यह गायकी शान्ति का असीम सागर है औेर यह गायकी उतनी ही कठिन है जितने दुसरे काम कठिन होते है मसलन डाक्टर, इंजिनियर या वैज्ञानिक बनने में आप जितनी मेहनत करते है यदि आप उतनी ही मेहनत धेर्य के साथ ध्रुपद सीख़ने के लिये करें तो निश्चित रूप से आपकी और ध्रुपद दोनों की तस्वीर और तकदीर बदल जायेगी ।